

[बिहार सरकार द्वारा स्कूल, कालेज एवं पुस्तकालयक हेतु स्वीकृत]

सम्पादक

प्रो० श्रीसुरेन्द्रभा
'सुमन'श्री सुधांशु 'शेखर'
चौधरीप्रो० श्रीकृष्णकान्त
मिश्र

एक प्रति १)

विशेषांक ॥)

वार्षिक ३)

आजीवन ५१.)

संरक्षक १२५)

श्रीकृष्णकान्तमिश्र
द्वारा दरभंगा प्रेस
कम्पनी (प्रा०) लि०
दरभंगामे मुद्रित
एवं प्रकाशितप्राप्ति-स्थान
वैदेही समिति,
लालबाग, दरभंगा

सूची

कथा-पिहानी

ओ दिन आ ओइ दिन	डा० श्रीब्रजकिशोरवर्मा	१०६
चारि सै बीस	श्रीतृप्तिनारायणठाकुर	८५
फुलवारी	श्रीगङ्गेश	६२
भिखभंगनी	श्रीनीलेन्द्रमणिभा	६७
प्रतीक्षा	श्रीप्रभासकुमार	१०५

लेख

डा० चटर्जीक भाषण	प्रो० श्रीभक्तिनाथसिंहठाकुर	११०
संस्कृत आयोग	श्रीआद्याचरणभा	११७

कविता

सबसँ पैघ के	कविवर श्रीसोतारामभा	१०३
सौनेट	प्रो० श्रीकेदारनाथलाभ	१०४
कुमारि	श्रीदीपक	१०१

स्तम्भ

पुस्तक-परिचय	श्रीविद्याधर	१०६
--------------	--------------	-----

मुख-चित्र : गत जनवरीमे प्रसिद्ध भाषावेत्ता डाक्टरश्रीसुनीतिकुमारचटर्जी दरभंगा मध्य वैदेही-समितिक एक सार्वजनिक सभामे मैथिलीक समस्यापर भाषण द' रहल छथि।

आवश्यक निवेदन

(१) गत फरवरी मासमे बृहत् कथा-विशेषांक प्रकाशित भै गेल एवं जे १६५६ क ३) चन्दा कार्यालयमे पठाँने छथि तनिके प्रति सभ पोस्टल सार्टिफिकेट द्वारा पठाँल जाइछ। १५ मार्च धरि यदि १६५६ ग्राहककेँ विशेषांक नहि प्राप्त होइन्ह, तँ कृपया कार्यालयकेँ सूचित कैल जाय।

(२) ई कथा-विशेषांक १६५६ मे प्रकाशित हैबाक चाही किन्तु सम्मेलनक अधिवेशनक कारणेँ विलम्बसँ प्रेषित कैल जा छ। एहि कथा-विशेषांकमे सम्पूर्ण

११० पृष्ठ अछि यद्यपि १६५५ मे १०० पृष्ठक विशेषांक छपल छल । नियमा-
नुसार पाठकक सेवामे साल भरिमे एहिसँ बड़ कम पृष्ठ प्रेषित होवाक चाही
तथापि एहि विचारें जे मैथिली-साहित्य दिसि लोकक विशेष अभिरुचि बढ़ै
एतेक खर्चा विशेष कैल गेल अछि ।

(२) ई विशेषांक तनिकहि पठौल जैतन्हि जे कार्यालयमे १६५६क ३) चन्दा
पठौने छथि । जून-जुलाइ १६५६ क अंक एहोमे सम्मिश्रित अछि । १६५७ क
नव ग्राहक वा अन्यकें पृथक ॥) ओ डाकखर्च पठौला उत्तर विशेषांक पठौल
जैत । १६५७ के नवोन विशेषांक वर्षक अन्तमे प्रकाशित हैत एवं १६५७ क
ग्राहक सभकेँ तखनहि प्राप्त हैतन्हि ।

(५) दोसर दुःखक विषय अछि जे गत कैक वर्षक चन्दा ग्राहक सभ लग बाँकी
अछि से शीघ्र पठैवाक कष्ट कैल जाय । कागत, छपाइ एवं संचालनमे टाका
प्रतिमास खर्च होइछ । प्रेसक टाका, कार्यालयक कार्य कर्ता सबहिक दरमाहा
कतेको मामक दातय अछि । बड़ कृपा हैत जे अपन बकि भौता चन्दा पठैवाक
कष्ट करी । मानमे !) मात्र हमर भित्ति थिक—वार्षिक ३) टाका मात्र ई
चन्दा बेसो तँ नहि बुझना चाही । समिति दिसिसँ कोनो त्रुटि आदि हो से
कृपया ओकरा हेतु विचारादि लिखी, अप्रसन्न नहि होइ ।

(६) सम्मेलनमध्य जे ५) टाका दै सदस्य बनल छथि तनिका जनवरी ६५७
सँ वैदेही पठौल जा रहल अछि । एहिँ पूर्ण नभैत नरक आय-व्यय निरोक्षण
(Audit) क हेतु 'वैदेही' नहि जा सकलन्हि ताहि हेतु क्षमा-प्राथी छी ।
कतेको गोटेक पूर्ण पता कार्यालयमे नहि प्राप्त भेलामे हुनक प्रति सभ कार्यालय
में पड़ल छन्हि से पूर्ण पता एवं ५) टाकाक रसीद संख्याक उल्लेख करैत
सूचना देथि ।

(७) लेखकगणसँ अनुरोध अछि जे अपन रचना पठबैत काल रचनापर पूर्ण
पता लिखि पठौल करथि जाहिसँ प्रकाशनोत्तर समयपर लेखकक प्रति पठौल
जा सकन्हि ।

(७) 'वैदेही'क १६५७क अग्रिम चन्दा पठाबै काल मनीआर्डर कूपनपर स्पष्ट
लिखल जाय जे '१६५७ क चन्दा जा रहल अछि ।' ग्राहक संख्या पैकेट क
लेबुलपर जे लिखल रहैछ तकर उल्लेख अवश्य कैल जाय ।

मंत्री, वैदेही समिति, दरभंगा

चारि सै बीस

पाछू कतेक चिह्नी-नत्री एकरा नैहरसँ एबो कैलै, यदि आवेँ, तँ हम सरकारक द्वारा लिखा-पढ़ी कऽ कऽ तोरा पारपत्र दिआवी परख्र अपने तँ ई कोनहुना ओइ पतिघातीक सङ रहियो जाइति, मुदा ई मुन्ना ? पैघ भेने ई ओकरा की कहिकेँ बुझवितै ? इएह ने जे मिस मार्टिनक नामकरण ठीक नहि भेलनि । डेडी नहि मम्मी छलि—४२० ।

‘स्वेज’क तट । स्वर्णजालसँ ग्रथित प्रातः । ‘रोजी’ तटस्थ उद्यानक ध्वंसावशेष दूभिक आसनपर बैसलि छलि । मरुप्रदेशक कनकन बसात ओकरा कर्ण-प्रदेशक कुन्तलराशिकेँ दोलायमान् कऽ रहल छल एवं ओही प्रक्रियामे ओ बसात कर्णपुरग्रामक सुन्दर सिनुरिया आम-सन ओकरा लाल कपोलक सुख-शय्यापर कानए काल सुसतेबाक उपक्रममे छल । कोनो कातसँ एकटा बुलबुल चिड़ै ओकरा लगकखजूरकडारिपर ‘उदयशङ्कर’क नृत्यकेँ ‘विद्यापति’क छन्दमे बान्हिकेँ स्पष्ट करैत छल जेना ओ ओइ रमणीकेँ प्रसन्न करबामे दत्तचित्त हो । कौखन-कौखन नहरमे अवस्थित जहाज अपना कर्णकटु स्वरेँ एकरा अपना दिशि आकृष्ट करैक यत्न करै छलै । परंच ओ रमणी सब - किछु देखितहुँ किछु नहि देखि रहल छलि एवं सब-किछु सुनितहुँ किछु नहि सुनि रहल छलि । जनकक विदेहावस्थामे प्राप्त छल ओ ।

ओकरा मोन पड़ै छलै अपना मातृभूमि टेम्स नदीक तटक उद्यान, जाहिमे ओ अपना सहपाठी-करीमक सङ नित्य सायं-प्रातः बूलए जाइ छलि । कतेक उप-हास, कतेक व्यङ्ग्य, कतेक कनफुसकी होइ ओइ काल ! ओः, तैयो ई जोड़ी ओइ ईर्ष्याक अवहेलना करैत, ऐँ ठि-ऐँ ठि चलए :

जाइत देखल पथ नागरि सजनि गे, आगरि सुबुधि सयानी

क स्पष्ट चित्र जेकाँ एहि युगलमूर्तिकेँ देखि-देखि कतेको बाला-लोकनिक छाती फूटि जेकाँ फाटि जाइ ।

आइ ई रमणी अत्यन्त उदास मनेँ किछु सोचै छलि । छात्र-जीवनक चल-चित्र । ओइ दिन हिस्ट्रीक पीरियड रहै । मिस मार्टिन पढ़वैत रहथिन । हँ... हँ... हुनके घण्टी रहनि । ईहो अपना गामक कालेजसँ पास कऽकऽ उच्चशिक्षा क हेतु लन्दनक चेम्सफोर्ड कालेजमे नाम लिखओने छलि । ओहि दिन क्लास मे रङ-विरङक बाला, रङ-विरङक फूल जेवाँ । रङ-विरङक साज-सज्जामे सजलि रहैत । क्लासमे रङ-विरङक स्मृत-हास्य-सह दृष्टि-निक्षेपण चलैत रहै । अकस्मात् एकटा नवयुवक क्लासमे प्रवेश कैलक । दुग्धफेन-सनतँ नहि परंच बालरविक रक्तवर्ण-सन ओकर मुख-मण्डल छलै । सूटवूटसँ बुझना जाइ जेना पश्चिमी-एशियन हो । ओहने विस्फारित नेत्र, ओहने मोहक मुखकान्ति । ओकरा देखितहि अनेरे एकरा हृदयमे जेना गुदगुदी लागि गेल रहै मुदा लगले ई सम्हारि गेलि । क्यो सहपाठी ई आकस्मिक परिवर्तन देखलकै नहि । मोनमे कने लाजो जेकाँ भेल रहै । जँ क्यो बूझि जैतै ? तावत् मिस मार्टिन ओइ नवागतकेँ पुछलखिन—अहाँक नाम ? उत्तर भेटलनि—करीमबख्श । ओह ! अहीक नाम थीक करीम ? 'इजिप्ट'सँ आएल छीने ? अहाँक रौलनम्बर थीक 'फोरट्वेण्टी' । बुझल अछि तँ ? ओ नवागन्तुक एशियन ढङ्गसँ हुनका अभिवादनपूर्वक धन्यवाद देलकनि । फेरऽ अपना सीटपर बैसि गेल । परंच सम्पूर्ण हॉलमे एकहि बेर हास्यक बम फूटि गेलै—फोरट्वेण्टी ।

रोजी छलि ब्रिटिश-सेनाक कमाण्डर-इन-चीफक एकमात्र पुत्री । विगत महायुद्धमे एकरे पिता हिटलरक आक्रमणक अवरोध सफलतापूर्वक कैने छलै । हिटलरक पतनक पश्चात् ब्रिटिशसरकार एकर पिताक सम्मान लौर्डक उपाधिसँ कएने छलै । कमाण्डर रोजीक विचारधारामे कोनो प्रकारक व्यवधान उपस्थित नहि करै । तथापि एतेक चेष्टा ओ सतत् राखए जे एकर भविष्य उज्ज्वल होइ । अत्यन्त स्नेहयुक्त लालन-पालनक सदुपयोग ई नीक जेकाँ कएने छलि । फलतः अपना युनिवर्सिटीमे ई सतत् सर्वप्रथम स्थान प्राप्त करैत रहलि । एहि कालेजमे अबि-तहि सभ प्रोफेसर एवं नव-पुरान छात्र-छात्री-वृन्दक आकर्षण-केन्द्र [ई] बनि गेलि । एकर प्रतिभा तँ पहिले दिनुक 'डिबेट'मे अपन दिव्य-छटा देखा देने छलै । सभकेँ । ताहूपर एकर रूप, शिष्टता एवं चित्तक प्रसन्नता । किमु यत्र चतुष्टयम् ?

जेना स्वयं जीसूखिष्टक अंश लऽ कऽ आएलि हो । ओहने कान्ति, ओहने शान्ति ।

करीम छल अत्यन्त सम्भ्रान्त एकटा जमींदारक सुपुत्र । इजिप्ट सरकार छात्र-वृत्ति दऽ कऽ, उच्चशिक्षाक हेतु एकरा लन्दन पठौने छलै । जहिना छात्रा-वर्गकेँ रोजीक अभिमान छलै, तहिना छात्र-वर्गकेँ करीमक । सब दिन 'रिसेस' मे इएह दुनू व्यक्ति आलोच्य रहै छल । तखन यदि करीमक आकर्षणसँ रोजी, एवं रोजीक आकर्षणसँ करीम आकर्षित भऽ गेल, तँ ई कोनो विचित्र गप्प नहि । एहि क्रियाकेँ प्रकृति-सुलभ कहक चाही । किछुए दिनुक बाद छात्रा-छात्र देखए लागल जे ई जोड़ी 'रिसेस'मे एकान्तान्वेषी भऽ गेल अछि ! बोटानिकल-गार्डनमे लवङ्गलताक तरक बेञ्च भऽ गेलै एहि दूनूक विश्रामस्थल, आ बाल्यजीवनसँ आइधरिक प्रमुख-अप्रमुख घटना भऽ गेलै 'अरेबियन नाइट'क अविश्रान्त कथा । कहियो ने एकरे सठै, ने ओकरे । कखन घण्टी बजै, से कि ई सब सुनबो करै ? रोजीक सखी जखन व्यङ्ग्यस्वरेँ कहै—रोजी टा-टा !! तखन एकरा सभक ध्यान दूटै । दौड़ए दूनू क्लासदिशि हँसैत । जेना दूटा मृगशावक फुदकैत जाइत हो । करीमक सडी सभ पाछू कहैत जाइ—फोरट्वेण्टी !...फोरट्वेण्टी !!...

पाँच वर्ष बीति गेल । करीमकेँ हिस्ट्रीमे पी. एच. डी. क उपाधि भेटलै । एक दिन रोजी एकरा सङ टहलए गेलि फुलवाड़ी दिशि । करीम बाजल—रोजी, अहाँक देशसँ हम एकटा अलभ्य वस्तु अपना देश लऽ जा रहल छी । से की ?

लन्दनक सर्वश्रेष्ठ विभूति ।

हम नै बूझल ।

हम नै कहब ।

कोहेनूरवला ताज ?—प्रश्नमे व्यङ्ग्य छलै ।

ऊँहूँ !

तखन...तखन...क्लाइवक तरुआरि नहि तँ ?

ऊँहूँ !

तखन ...तखन...शेक्सपियरक कलम ।

ऊँहूँ !

तखन...तखन...राजकुमारी मार्गरेटकेँ तँ नहि ?

ताहूसँ नीक ।

एहि सबसँ नीक वस्तु हमरा लन्दनमे छैके ने किछु...

छै.....

की छै ?

मिस...मिस...

हँ...हँ, कहू...कहू...रोजीकेँ जेना अभिचङ्क भऽ गेलै ?

कहू ? कहबे करू ? सुनबे करबै ?

हँ-हँ-हँ, भट दऽ कहू ।

मिस.....मिस...

वेर-वेर 'मिस...मिस्स' सुनिकेँ रोजीकेँ लगलै जेना ई हमरा अपमानित कऽ रहल छथि । ओ विचारए लागलि—मिस की ? कहबो तँ करूथु । के एहेन थोक जे हमरासँ हिनका छीनि लेलक ? रोजीक कोमल हृदय फाटि गेलै । अविरल अश्रुधारा बहए लगलै । आब तँ करीमकेँ बजलासँ पश्चाताप भेलै जेबीसँ रुमाल बहार करैत ओकर नोर पोछए लागल ।

रोजी—वृक्षल-वृक्षल दुलार । कहैत एकरा हाथकेँ हटा देलकै ।

करीमकेँ आब रहल नै गेलै । ओ ठहाका देलक । रोजी भागलि ठहाका सुनिकेँ ।

एतेक अपमान ! एतेक अनादर !! वास्तवमे एशियन छात्रकेँ शिष्टताक ज्ञान नै होइ छै । हमर डेडीक ई उक्ति आई सदर्थ बुझना गेल ।

करीम चिकरल—रोजी, रोजी, मिस रोजी, घुरू । हम ओइ मिससँ अहाँकेँ भेंट करै दै छी ।

रोजी घूमलि । लुधित सिंहनी जेकाँ । बाजलि—कहाँ अछि ओ ? देखाउ कने ।

अहाँ ओकर अपमान तँ नहि करबै ?

हम अंग्रेज-कन्या छी । सभ्यता जनै छी ।

तँ लग आउ ।

देखाउ—कहैत रोजी एकटा बेझपर बैसि गेलि । करोमो ओकरा लग सटिकेँ बैसल । ओ फेर बाजलि—देखाउ ।

अहाँ वचन दिअऽ ।

कोन बातक ?

अपमान तँ नहि करबै ने ?

छोड़ व्यर्थ गप्प । देखा दिअऽ ।

देखू । इएह थीकि हमर प्रियतमा मिस...मिस—ई कहैत ओ ओकरा भरि पाँजसँ पकड़ि, अपना अन्तःस्थलमे सटा लेलकै, ओ ओकरा रक्तवर्ण मुख-मण्डलक अनेक स्थलमे अपन प्रणय-चिन्हक दू-चारि गोद, मोहर छापि देलकै । एहि अप्रत्याशित आक्रमणसँ रोजीक अश्रुधारा आओरो अजस्र रूपेँ बहए लगलै । केवल बाजलि—निर्दय, धूर्त, चालाक, ४२० । लगहिमे एकटा कोनो चिड़इ बाजलि—कुहू-कुहू । जेना ओहो कहलकै अपना भाषामे एकरा—४२० ।

सुनल ? आइधरि तँ इजरायलक सेनाक पाछूमे ठाढ़ भऽ कऽ अहाँक नैहरक लोक हमरा मातृभूमिपर गोलीक वर्षा करैत छल, परंच आइ अहाँक नैहरक प्रधानमंत्री अपना सरकारक दिसिसँ बाजि गेला—इङ्गलैण्ड आर फ्रान्सक सम्मिलित सेना मिश्रपर चारू कातसँ आक्रमण करत; कारण जे इजरायल आक्रमणसँ स्वेजक नहरकेँ संकटक संभावना छै । स्वेज थीक सम्पूर्ण विश्वक उपयोगी वस्तु, आ तकर रक्षा करब थीक हमरा सभक कर्तव्य । केहेन स्वार्थी अछि अहाँक नैहरक लोक !

अहाँ हमरा नैहरक निन्दा एहि रूपेँ नहि कऽ सकैछी । ई कहिओ जे किछु सत्ताधारीक स्वार्थसँ ई योजना स्थिर भेलैए ।

अहाँकेँ डेढीक चिट्ठियो कोनो आएल अए ?

हँ ।

की सब ?

जे ओहो जलमार्गसँ किछु सेनाक एकटा कमाण्डर रूपेँ आबि रहल छथि । हुनक लक्ष्य रहतनि एही शहरकेँ दखल करब ।

युवक कने लुभित भऽ गेल । फेर अपना केँ संयत करैत बाजल—तँ ओइ काल अहाँक कर्तव्य की रहत ? पचमाझी तँ नहि ?

छिः, हमर जीसूखिष्ट ई शिक्षा नहि देने छथि जे विश्वासघात करी, आब हमरा इङ्गलैण्डसँ कोन मतलब ? आब हमर मातृभूमि थीक मिश्र—प्रिय मिश्र ।

धन्यवाद ! आइसँ सब कालेज बन्द भेलै अए । सब छात्र-छात्री एवं आध्यापक-गण ट्रेनिङ्गमे जेताह । हमहुँ सायं-प्रातः ट्रेनिङ्ग लेबए जाएब । की विचार... अवश्ये जाइ । हमहुँ जँ नर्सक ट्रेनिङ्ग ली तँ केहेन हेतै ?

होइत तँ उत्तम, मुदा ई तीन मासक मुन्ना ? ट्रेनिङ्गक बाद तँ युद्धमे जाए पड़त । तखन एकर ? के रखतै ऐ पिहुआकेँ ? अहाँ घरमे एकरे सेवा करू । ई की मिश्रक भावी सेनानी नै थीक ? एकरे सेवासँ अहाँक कर्तव्यक पूर्ति भऽ जा रहत ।

युवतीक आँखिसँ नोर झहरए लगलै । बाजलि—जाउ, अहाँ पुरुष थिकहुँ । अहाँक सन सौभाग्य हमर कोना होएत ? अहाँ तँ हमरा तेहेन बान्हमे ने बन्हलउँ, जे की कहू ?

चेर भऽ गेलै । जाउ हम ?

जाए कोना कहू ? झट दऽ आएब ने ?

पहिल दिन थिकै । संभव जे आइ कर्नल नासिरहुक भाषण हेतनि । तैयो १० बजे रातिक भितरे आएब । —ई कहि ओ युवतीक कोरासँ ओइ शिशुकें लऽ लेलकै, आ चुम्माक बरखा ओइ अबोधक गालपर कऽ देलकै । युवती की ओइ शिशुदिशि ताकै ? ओ तँ टकटक ओहि युवकक एहि प्रक्रिया दिशि तकैत रहए । युवक बाजल—ई थीक हमर सनेस । एकरा नीक जकाँ राखब ।

युवती सिहरि गेलि—एना किआए बजै छी ? हम नै जाए दैब तखन । बैसू । आ ओकरा कोरासँ ओइ शिशुकें लऽ युवकक गट्टा कसिकेँ पकड़ि लेलकै । आँखिसँ नोर दहो-बहो बहइ लगलै ।

युवक बाजल—बस ? एतबैमे ? एखनै तँ अहाँ सेनाक सेवामे जाइत रही ? एहने कलेजा पर नर्स बनितिहुँ ? आ, अपन हाथ छोड़ाकऽ ओकरा

हृदयङ्गम कऽ लेलकै । जेना एके शरीर, एके प्राण हो । ओइ शीतयुद्धक (Cold war) मे ओइ शिशुक क्रन्दनकेँ के सुनैअए ? युवक वाजत—एहि बच्चाक नाम हम राखब इडेन; कारण जे ओकरै क्रूरकार्यकालमे एकर जन्म थिकै ।

युवती विरोध कैलक—छिः. हमरा मिश्रमे कि नामक कम्मी छै ? हम एकर नाम राखब—४२० । ई सुनि युवक हँसैत-हँसैत घरसँ बहरा गेल । युवती बच्चाकेँ कोरामे लेने ताधरि खिड़की लग ठाढ़ि रहलि, जोधरि ओकर प्रियतम ट्राम पर चढ़ि ने गेलै, आ ओ ट्राम एकरा दृष्टिपथसँ विलुप्त नहि भऽ गेलै । तकरा बाद ओ कात भेलि । बच्चा चुपे ने होइ । मुदा ओ चुप करैक प्रयासमे अपन हृदयक भण्डारक द्वार उद्घाटित करैत वाजलि—तौहूँ छें ४२० ।

थोड़वे दिनुक अभ्यन्तरहि इजिप्ट (मिश्र) पर आक्रमणो भेलै, आ यू० एन० ओ०क सेनाक हस्तक्षेप होइतहि अँग्रेजी-फ्रान्सीसी सेना वीरताक प्रदर्शन करैत पाछुओ घुसकए लागल । एहि प्रत्यावर्तनमे अनेक परिवर्तन भेलै—महा-परिवर्तन । स्वेज नहरक अन्तस्तल डूबल जहाजसँ भरि गेल । कतेको नगर एवं जनपद उजड़ि गेल । अनेको लोक असामयिक काल-कवलित भेल । ओइ भीषणता मे रोजीक भाग्यक पलरा उनटि गेलै । जखन एकर पिता, कमाण्डर भऽ कऽ एहि शहरमे प्रवेश कएने रहथिन तखन अवरोधी दलक मुखिया छल करीम । एकरे करीम । एकर प्रियतम करीम । भाओर आरोही-दलक प्रधान छलाह एकरे डेडी । एकर 'डीयर डैडी' कैप्टैन अलबर्ट । अलबर्टकेँ जमाइसँ भेंट मोर्चेपर भेलनि । ओ कतेक बुझएबो कैलथिन, मुदा के मानए ? जीसूखीष्टक सन्तानक प्रभाव हजरत मोहम्मदक सन्तानपर नहि पड़लनि । वृद्धक रक्तक उष्णताकेँ कतहु युवकक रक्त सहए ? बासि घोर (मट्टा) उधियाइत देखि कतहु गर्म दूधकेँ रहल जाइ ? अन्तमे भेल ओएह जे नै हेबाक चाही; अर्थात् पिताक पशुता सँ पुत्रीक वैधव्य ।

पाछू कतेक चिट्ठी-पत्री एकरा नैहरसँ एबो केलै, यदि आवेँ तँ हम सरकार क द्वारा लिखापढ़ी कऽ कऽ तोरा पारपत्र दिआबी । परंच अपने तँ ई कोनहुना ओइ पतिघातीक सङ रहिओ जाइति, मुदा ई मुन्ना ? पैघ भेने ई ओकरा की कहिकेँ बुझबितै ? इएह ने जे मिस मार्टिनक नामकरण ठीक नहि भेलनि । डेडी नहि मम्मी छलि—४२० ।

फुलवारी

एह ओहेन त केओ ने अइ बाप रे...हऽ-हऽ । ओकरे दुआरे हमरा सभक फुलवारी चौपट भेल । कीकहिअऽ...एह...ओ जे नबका निसपीटर आएल रहइ कि ने तेकर इसतीरी बडऽ बुधि-आइर रहइ । कहुना भरि परोपट्टामे सज-बहु केँ मेल रहइ तज ओ एकटा इनाम गछलकइ जे जे अपन फुलवारी सभमँ नीक सजओने रहत तकरा सभ बरख पचासटाकेँ रूपइया इनाम भेटतइ । फुलवारीक काज त असगर पुरुष बुते हेतइ त नजि...भरि बरख भरि-भरि दिन दुनू बेकती ओइमे खटतो तऽ अनेरे मेल रहतइ ।

गामक जुआन सभ काजमे बाझल रहए, धियापुता सभ इसकुलमे, आ' कनिच्चा-बहुरिया सभ घर मे एक हाथे अपन चिल्हकाकेँ पकड़ने आ दोसरासे भानस-भात क हुच्ची मे व्यस्त छल । एक कात मे एक टा बुढ़वा एकटा 'बटोही सङे गाछतर वइसकेँ गाँजा पीअइत रहए । ताड़ीक कटिया आ माटिक चुकड़ी लगे मे राखल रहइ ।

गाछक छाहो नीक रहइ आ ताड़िओ । बटोही चीलम भरिकेँ एक बेर कातक झार-झंखार आ रउदमे टटाइत सड़क दिशि तकलकइ आ चीलम बुढ़वा दिशि बढ़ाकेँ फेर अपन गिलासमे ताड़ी ढारैऽ लागल । तकर बाद गाम दिशि ध्यान से देखइत मूड़ी डोलऽ लागल ।

हम जखन नेत्रा रही तइखन जेहेन रहइ तेहेन आब ई गाम नई रहलइ—बुढ़वा चीलममे भरल गाँजाकेँ अपन अउठाँ लऽ कऽ दबइत कहलकइ । आब त बड़ बदलि गेलइए ।

साठि बरसक अनुभवीक कारीगरी देखबइत ओ अपन चीलममे आगि धर-ओलक, अपन जन्म-स्थान क परिवर्तन पर ध्यान दइत बड़ गम्भीर भऽ कऽ मूड़ी डोलओलक आ तइखन ओकर आँखि चमकि उठलइक ।

मुदा गामोमे वेशी गौआँ सभ बदलि गेलइए, कत्ते त एहन छइ जे ककरो नीक नबि देखतइ—पुरान घाघ-सभ ! ...आ जऽ तोरा सुनइक मोन रहइ त हम एक-आध गोटे दऽ कहिअऽ जकरा कलकत्तोमे केओ ने छका सकइ छइ । ...जेना मडनूँ के लऽ लए...ओकरा एक बेर भोंक चढ़लइ जे आङ

-समाङ्क क खातिर एकटा एहेन कुमइटी हेवा चाही जइमे सभ गउवाँ हफ्ता मे चारि आनाकेँ दइ जाहऽक...आ ओ आकर सर्वेसर्वा बनि गेल । तिनिके हफ्ता तऽ बितलइ कि ओकरा अपनबि कफ धऽ लेलकइ आ महीना भरि पड़ल रहल । फेर जखन निकब भेल तऽ हफ्ता भरि काज केलक आ तकर बाद फेर ओकर पाएरमे बातरस धऽ लेलकइ आ जखन से छुटलइ तऽ पेटे खराब भऽ गेलइ । पहिने तऽ हमसभ अइ पर तत्ते ध्याने ने देलिअइ मुदा छऽवे मासक बाद कुमइटीमे एकोटा अद्धी ने रहलइ आ उनटे गउवाँ सभक जिम्मा मङ्गनूक बीस टा रुपइयो भऽ गेलइ । की कहलकइ से चुमलक ? कहलकइ कि जे आङ्के-समाङ्क ले तऽ ई जमा भेल-तऽ अइमे हम लगा देलिअइ ।

हउ एक्कोटा वएह टा नबि एहेन छइ हउ, दोसरो-सभ सएह छइ । दर्जिआही मे रहए एकटा इसखवा । ओ एक बेर दरभङ्गा गेल आ ओतऽ से जे घुइर क अएल-तऽ कि फुरलइ जे मोहरम ले एकटा एहन कुमइटी हेवाक चाही जइ मे सभकेओ आठ आना क महिनबारी दइ आ बरख भरि मे जे जमा होइ तकर मूर्गा एवाक चाही जइ सँ कि मुइरममे खूब चकल्लस भऽ सकए । दस-मास धरि सभ मिवा-सभ चन्दा दइ गेलइ आ जइखन मोहरम लगीच इलइ कि ओ फेर दरभङ्गा गेल मुर्गा किनऽ आ से घुइरकेँ अखइन धरि नबि अएल । कहिआ धरि घुइरकेँ आओत से कोनो पता नबि । ओकर बहिन मुदा कहइ छइ जे ओ ओतऽ खूब निकब अइ ।...

मुदा सभसँ नडट आ चलाक अइ परोपट्टा भरि मे अइ भतुआ । एह ओहेन त केओ ने अइवाप रे...हऽ-हऽ । ओकरे दुआरे हमरा सभक फुलवारी चौपट भेल । की कहिअऽ.....एह...ओ जे नबका निसपीटर आएल रहइ कि ने तेकर इसतीरी बडऽ बुधिआइर रहइ । कहुना भरि परोपट्टामे सब-बहुकेँ मेल रहइ तब ओ एक टा इनाम गछलकइ जे जे अपन फुलवारी सभसँ नीक सजओने रहत तकरा सभ बरख पचासटाकेँ रुपइआ इनाम भेटतइ । फुलवारीक काज त असगर पुरुष बुते हेतइ त नबि ...भरि बरख भरि-भरि दिन दुनू बेकती ओइमे खटती तऽ अनेरे मेल रहतइ । ओह ! पहिल बरख जे भेलइ की शानके भेलइ । के जनइ छल जे अगिला बरख जे हेतइ से आखरीये हेतइ ...भरि साल लोक बेहाल रहल सऽहरसँ कोबीक बीआ लाबए तऽ किसिम-

किसिमकेँ फूलक गाछ लाबए...एना कोरै-ओना जोतै... की-की ने करए... ।
 फागुन-चइत हाइत-होइत सउँ से गाम स्वर्ग बनि जाइ ।...ओइ
 हँ त कहलियऽ जे...दुइये बरख भेलइ । पहिल बरख इनाम भेटलइ पुलकि-
 तबाकेँ...इउ रहबो जे करइ ओकर फुलबारी से देखइ जोगर...केनाकेँ बत-
 चने रहइ ओहेन से नबि कहि...भरि साल बेचारा ओहीमे हरान रहइ
 छलए ।...आ पहिल बरख जइखन इनाम जीत गेलइ तऽ आरो जो-जानसँ
 दोसरा बरख ओहीमे लागल रहल । पचास रुपइआक लोभ अनको ने
 छोड़ल जाइ...सभ अपना मे उपरा-उपरी करए । ...तहूमे चारि गोटेकेँ तऽ
 पूछइ नइ... सुकना, गेनबा, भुटकुनमा आ' भोगिआ...अइ चारू गोश ठ
 फुलबारी पुलकितबासँ कोनो तत्ते बेजाए नबि रहइ । जइखन इनाम देवाक
 समय लगिचेलइ तऽ सभकेँ ई बुझबा जोगर भऽ गेलइ—अइ बेर अही
 पाँचोमे सँ केओ जिततइ... सभ ओकरे सभक देखौस करऽ लागल ।...मुदा
 सभकेँ ई बुझि पड़इ अन्तिम समय कोनो तेहेन ने सिंगार क' देतइ ओ सभ
 जकर नकल केनाइ बड़ कठिन ।

किन्तु सभकेँ भुआ क फुलबारी देखि के हँसी लगइ...किए तऽ ओ तेहेन
 ने सुस्त रहए जे भरि साल अपन फुलबारीकेँ खुरपिओ ने देखओने रहइ । इउ
 जत्ते कूड़ा-करकट रहइ सभटा ओहिमे के फेकने रहइ ।...जइखन मास दिन
 देरी रहि गेलइ तऽ तेहेन ने काण्ड भेलइ जे सभटा चौपट भऽ गेलए । खंत-
 रबा रहइ भुआक सार । बूढ़-सूढ़ रहइ...बड़ नीक लोक । ओकर एकटा दोस
 रहइ कलकत्तामे बहुत दिन से मुदा दुनूकेँ चिट्ठी-पतरी धरि खूब चलइ । से
 ओहू दिन एकटा चिट्ठी ओकरा ओतऽ से एलइ आ' खंतरबा ओ पढ़िकेँ छट-
 पटाए लागल । किछु ने फुरइ जे की करी—एम्हरसँ ओम्हर आ ओम्हरसँ
 एम्हर टहलएत रहए कि पहुँचलइ पुलकितबा । ओकरा जे अइ हालतमे देख-
 लकइ त लग जाकेँ पुछलकइ जे की बात छइ ।

कहाँ किछु...उएह एकटा चिट्ठी कलकत्तासँ अएले सएह...आर नइ किछु ।
 खंतरबा कहलकइ । पुलकितबाकेँ गप्पक खोध-बेध बड़ रहइ छलइ । ओकरा
 रहल नबि गेलइ तंग करऽ लगलइ त सपत खुआकेँ खंतरबा ओ चिट्ठी
 ओकरा देखऽ देलकइ ।

हउ...ओ चिट्ठी कि रहए...एकटा' कथे बुझहऽ । लिखने रहइ ओकर दोस
जे ओकर पित्ती हालेमे खतम भऽ गेलइए आ मरइकालमे ओ कहलकइए जे
आइसँ तीस बरख पदिने ओ अही गाममे रहइ छलइ से रातिमे जइखन
सूति रहलइ त ओ उठलइ आ पाँच सए सतरह असर्फीकेँ एकटा घएलामे
बन्द कऽ कऽ कोनो फुलवारीमे गाड़ि देलकइ जे जइखन कलकत्ता से घुरिकेँ
आएब तऽ फेर लऽ लेब ।

पुलकितबा पुछलकइ तइखन खंतरबासँ जे ओकरा एत्ते असर्फी एलइ कतऽ सँ,
तइ पर खंतरबा कहलकइ जे भरिसक बइमानिये क रहइ... किए' त' ओ
कोनो तेहेन लोक त छल नबि ।...जेना-तेना भेल होइ... ओकर दोस आव
ओ असर्फी हथियाबऽ चाहइ छइ तब ओकरा लिखलकइए जे कोन फुलवारी
मे छइ से ताकिकेँ चुपचाप उपारि लइ ले ।

आ हम की करी से हमरा किछु फुरिते ने अइ । ओ जेना लिखलऽके तइ
हिसावे तऽ सड़कक दछिन भाग से दसम घरक आगूक फुलवारीमे हेबाक
चाही मुदा से त ओ सोचइए कि ने हउ, कोनो ठोक-ठीक कहाँ लिखइए....। हँ
एकटा ज करी त भ सकइ छइ...की तोहर विचार होइ छऽ जे अइले हम दस
रूपइया लगा दियइ...जे ताकि देत तकरा दऽ देबइ दस रूपइया...ऊँ ? खंत-
रबा कहलकइ पुलकितबाकेँ ।

आ तइपर ओ कहलकए —नइ हउ...से नबि नीक हेतऽ... जऽ तोरा जकाँ
ई बात ककरो नबि कहितअए ।

हूँ...तों ठीके कहइ छऽ...दोस तऽ हमरा कहिओ ने माफ करत जऽ ई रुप-
इया कयो आन लऽ लेतइ तऽ...हे नेहोरा करइ छिय तहूँ नबि कतउ बाजऽ
एकरा...हमरे सपत छियऽ... ।

आ सपत-तपत खाकेँ पुलकितबा अपना ओइठाँ आएल । खेलक-पीलक आ
चुपचाप सड़क पर आवि कऽ घुमऽ लागल...थोड़े दूर जाए फेर घुमि आवए
फेर जाए घुमि आवए...आ कहियो जइ बात पर ध्यान नबि देने छलइ से
नजइर पर चल एलइ जे ओकरे घर तऽ दसम पड़ए छइ ।

अनेरोके ओकर अडनावाली उठलइ त ओकर कतउ पते ने देखलकइ । ओकरा
भेलए जे फुलवारीमे बाझल हएत आ बाहर आविकेँ देखलकइत सत्ते । कने-
कने रातिए रहइ, ओ फेर सुतइ ले चल गेल भिनसर मे जे उठल त फेर वएह

ताल—पुलकितवा घामे—पसीने नहाएल जी—जानसँ फुलवारीमे व्यस्त छल। तइखन ओ लग गेलइ आ जे देखलकइ से देखि के सन्न रहि गेल—पुलकितवा फाँड़ बन्हने कोदारिसँ सउँसे फुलवारीकेँ तामि रहल छल—तामि की रहल छल, कोड़ि रहल छल। ओ जे कारण पुछलकइ त भूमिकारिकेँ चल जाए कहलकइ, नइ गेलइ त मारऽ दौड़लइ। तखननि भुटकुनमो ओइ वाटे कतउ जाइत रहए। ओहो बेचारा अकचकएल। कनिजे टोकलकइ कि तत्ते जोरसँ ने दबाइलकइ ओ जे बेचारा नाङ्गि सटका केँ चल जाइत रहल। होइत-होइत सभ बुझि गेलइ ई बात। भरि दिन भूखल—प्यासल पुलकितवा कोदारि चलवइत रहल आ ओकर अङ्गनावाली सभकेँ नेहोरा करइत रहलइ जे नेओ ओकरा बुझवइ गे। मुदा ककर सक छलइ से। तइयो एक गोटे गेल, लग जाकेँ बड़ी काल धरि ठाढ़ भऽ कऽ देखइत रहलइ आ फेर घुइरकेँ चल आएल। ककरो किछु अर्थे ने लगइ। निसपिटर दुनू बेकती छुट्टीमे कतउ आनठाँ' गेल रहइ। अन्तमे एक गोटे ई अन्दाज लगओलक जे भऽ सकइए ई कोनो नव ढंग होइ...वन ओहो अपन फुलवारीकेँ ओहिना कोरऽ लागल। देखादेखी सभ ओकर नकल करऽ लगलइ किएक तऽ जे पुलकितवा परकाँ इनाम जीतने छलए से कतउ अनेर एना करए। पन्द्रह दिनकेँ भीतर एकोटा एहन फुलवारी नबि रहलइ जे देखइ जोगर होइ। बस जइ दिन इनाम भेटितइ तइ से एके दिन पहिने हम देखलिअइ जे भतुआ अपन फुलवारीकेँ ठीक-ठाक कऽ रहल अइ...आ सेहो कि कोनो कर्मक। एक आध टा अड़हूलक डारि आ चारि-पाँच टा गुलाबकेँ रोपने छलइ। जे देखइ सभ के हँसी लागि जाइ। मुदा भेलइ कि से तऽ बुझिते हेबइक, भतुआ इनाम जीति लेलकइन। सभकक मुह अपन-सनक भऽ गेलइन। आ तइखन भतुआ मोड़ पर ताब फेरइत सभकेँ ताड़ीक नोट देलकइ।

मुदा ओ अन्तिमे इनाम छल, फेर तकर बाद कहिओ ने भेलइ।

आ ई कहि बुढ़वा चीलम हाथसँ राखि देलकइ। †

भिखमंगनी

संसारीमे सब तरहक लोक अछि, एहि संसारमे प्राणी मात्र अपने ताले नचैत अछि । ओकरा समस्त आव भीख सबसँ निकृष्ट वस्तु बुझि पड़ैत छैक, तैयो आइ चारु कात उएह भीख ! भीख !! भीख !!! क शब्द व्याप्त अछि ।

बाबू, एकटा पाइ दिअ, हम दू दिनसँ भूखल छी, माए-बाप हमरा कियो नहि अछि, एकटा बूढ़ नानी मात्र घरमे पड़ल अछि । बाबू, किछु त कृपा करू, एहि अबोध बालिकापर अपन कृपा-दृष्टि त दान करू । भगवान नीके करता... एतवहिमे घरसँ एक कमैनिहार बाहर भ भिखमंगनीक भोरामे एकमुठ्ठी चाउर खसा देलक । भिखमंगनी छोटएसँ विदा भए गेल । समय प्रातः बारहक समीप गेल छल । गोटेक - गोटेक लोक जे कि अभागल छथि, जनिक भाग्य-रेखा मोटका कलमसँ लिखल गेल छल सैह व्यक्ति सड़क पर जा रहल छलाह । ककरो कतौ पता नहि किन्तु एक सात - आठ वर्षक बालिका जकर जीवन प्रायः भीखे पर अवलंबित छलैक ओ आगि सन प्रचण्ड रौदमे कोनहुना जा रहल छल । ई संसार धन्य अछि । ककरो खयबाकेँ उपाय नहि छैक आ केओ पूरी-जलेबी खाइत अछि, ककरो रहवा लए घर नहि छैक आ ककरो बड़का-बड़का कोठा छैक जे कि खसक टाटसँ सुशोभित एवं सुगन्धित रहैत अछि । ई अपन - अपन भाग्यक फल थोक ।

सहरक एक कातमे किछु खोपड़ी छल जाहिमे प्रायः सब भिखमंगा आर किछु छोट लोक वास करैत छल । ई भाग सब भागसँ धृष्ट आर भयावह छल । एहि खोपड़ीमहक लोक अपन जीवनकेँ ओही तरहें व्यतीत करइत छल जेना कि कूड़ा - कड़कटसँ भरल खादिमे मच्छड़ हो ।

दू वाजि गेल छलैक । ओही समयमे एक बालिका एक टूटल एवं निकृष्ट खोपड़ीमे प्रवेश कएल । भीतर प्रवेश करितहि एक शब्द आएल—के छीये ? हम छी, रेमनी । ओ बालिका कपैत कण्ठसँ बाजल । तावतमे एक बुढ़िया

समीपमे आयल आओर ओ पुञ्जलकैक—एलै गै रामा, बड़ देरी भऽ गेलौ । रामो कहलकैक—दाइ गे, एक भोरसँ बैसले रहि गेलौ अखन चलैत बेर दू गोटे कनेक-कनेक चाउर देलक, सेहो घिघरी कराकए ।

आ बैस, फुलाए कए खा ले । 'की करवे', भगवान जखन एहने दिन देने छथुन्ह त अपन साध्ये कोन ? आइ माय-बाप रड़ितौ त ई कार्य नहि करए पड़ितौ—बुढ़िया कनैत बाजलि । दाइ ! रौद बड़ भऽ गेल छलैक, बुझि पड़ए जे आब नहि बाँचब—एतबा कहि दूनू गोटे खैवाक उपक्रममे लागि गेल । करत की, कोनोहुना त जीवन-निर्वाह करबाक छलैक । ओकरा लोक-निक जीवनकेँ भगवाने कोनो तरहें बितौने चल जाइत छलखिन्ह ।

दस वर्षक बाद !!

सड़कक काते-काते एक युवती भिखमंगनी हाथमे भोरी रखने मैल एवं फाटल वस्त्र शरीर पर लटकौने लोकक मुँह तकैत चल जा रहल छल । ओ भिखमंगनी थीक, भीख मङ्गवाक हेतु अपन मान मर्यादाकेँ छोड़ि कोनो तरहें पेटक पालन कए रहल छल । ओ प्रायः उएह 'रेमनी' थीक । रेमनी आब पूर्ण युवती भए गेल छल । यौवनक आभा ओकरा शरीरसँ प्रस्फुटित भए गेल छलैक । भीख मँगैत छल परञ्च ओकर आंखि कहियो उपर नहि उठलै । कतेको जन ओकर दीनता आ असहायवस्थाकेँ देखि कए ओकरा किछु सहायता कए सन्तुष्ट करथि परञ्च कतेको जन अपन-अपन स्वार्थक हेतु ओकरा भीख दए सन्तुष्ट करथि । किन्तु ओहि अवोध बाला रेमनीकेँ ओतेक ज्ञान नहि छल, ओकरामे सोचबाक ओ शक्ति नहि छलैक तैओ ओ कहियो काल कऽ सोचय जे आइ-काल्हि लोक एतेक दानी कियेक भए गेल अछि । जे सेठ आर दोकानदार किछु दिन पूर्व हमरा धक्का दए द्वार परसँ हटा दैत छल, आइ ओ श्रद्धा एवं पैसा देबामे कनेको हिचकिचाइत नहि अछि । सब प्रसन्न भए हमरा संग गप्प करइत अछि ।

सन्ध्याक बेर आवि गेल । शहरक बिजली प्रज्वलित भए उठल । सब टहलक हेतु घरसँ बहराय फुटपाथ पर यत्र-तत्र घूमि रहल छल । रेमनी सेहो घूमि रहल छल शहरक आभा देखबाक हेतु नहि ।

विन्तु अपन, उदरक हेतु, लोकक मुँहकेँ निहारि कखनो काल कऽ कहैत छल—
बाबू ! एकटा पाइ दिअ । कतेक जन पैसा निकालि कए दैत छलाह आ कतेक
जन ओकरा दिस ताकि विहुँसि दैत छला । सहसा एक व्यक्ति आयल आ
ओ' रेमनीकेँ देखि कहलन्हि—रेमनी तों भीख किएक मंगै छैँ । रेमनी
अवाक् भए ओहि युवककेँ देखल । रेमनीकेँ बूझि पड़लैक जे प्रायः केओ
परिचित व्यक्ति छी । परञ्च ओ चीन्ह नहि सकल जे ई व्यक्ति के थीक !
युवक फेर कहलक—रेमनी ! तोहर विपत्ति सुनि आइ हम दौड़ल आयल छी ।
हमरा पता नहि जे तोंहूँ, एही शहरमे रहैत छैँ । पहिने हमरा भ्रम भेल जे
तों नहि छीयें, बहुत कालसँ हम एतऽ ठाढ़ छी आ तोहर दशाकेँ देखि हमरा
रहल नहि गेल, हमरा, अछैत जों तोरा ई कर्म करऽ पड़ौक त हमरा एहिसँ
मरि जायब नीक थीक । तों हमर बाल-संगी थीकेँ हमरा तोरामे ओ प्रेम
छल वा ओ भावना आबो अछि जे प्रायः आइ - काल्हि गनल - गूथल व्यक्ति
मे भेटैत छैक । भगवान आइ हमरा एहि पथपर आनि देलैन्ह जाहिसँ हम
तोहर दर्शन कए सकलौं । आबो तूँ हमरा घर जा सकैत छैँ आ हमर बाल-
बच्चाकेँ तूँ अपन बाल-बच्चा बुझि ओकर सेवा कए तथा हमर गृहिणीकेँ
तूँ अपन बहिनि बुझि हुनक कार्यमे सहायता कए अपन जीवन व्यतीत कए
सकैत छैँ । तोहर ई दशा देखि हमर हृदय टूक-टूक भए गेल । बाज की
विचार छौक ?

रेमनीकेँ आँखिसँ अश्रुधारा बहैत छल ! ओ भट दए ओहि युवककेँ पाएर
पर खसि कानए लागल आ बाजल—दिनेशबाबू ! अहाँ हमरा लए व्यर्थ
हरान छी । अहाँकेँ बाल - बच्चा सब भेल । हमर दशा देखि अहाँ कियेक
विचलित होइत छी, भगवानसँ कहियौन्ह जे कौनोहुना ई जीवन व्यतीत भय
जाए । हम अहाँ कतऽ जाएब त लोक खराब भावनासँ हमरा आर अहाँकेँ
देखत । समाज सेहो बुझत जे ई सब व्यभिचारी थीक । अहाँ कमसँ कम एहि
लोक - लज्जासँ बाँचू । हमर चिन्ता जुनि करी ।

दिनेश उत्तेजित भए रेमनीकेँ कहलक—रामो ! समाज आइ लोकक उन्नति
देखि जरैत अछि किन्तु भाइ - बहिनिक प्रेममे जे समाज हस्तक्षेप करत ओहि
समाजक हमरा कनेको भय नहि अछि । हम आइ धरि तोरा अपन बहिनि

मानि अपन भावनाकेँ तोरा सामने राखल । तों हमरा संग चल । हमर परिवारमे रहि परिवारकेँ उन्नति करबामे तोरो हाथ छौक ।

रेमनी चुप भए गेल । भाइक आग्रह के बहिनि कहियो नकार नहि कए सकैत अछि । दिनेश ओकर हाथ पकड़ि बाजल—भाइक आगू बहिनिकेँ कनेको संकोच नहि करबाक चाही एवं भाइकेँ चाही जे जत' धरि भए सकै बहिनिक उपकार वा रक्षा जीवनपर्यन्त करए । तों हमर बहिनि थीकेँ ! चल आइसँ भाइक सेवा कर' गए । रेमनी चुप्पे भए सभ सुनैत रहि गेल । तावत एक मोटर आयल आर दूनू व्यक्ति मोटर पर चढ़ि बिदा भए गेल ।

रेमनी आव भीख नहि मँगैछ । ओ अपन भाइ दिनेश आर भाउजिक सेवा कए अपन जीवन व्यतीत करैत छलि । आव रेमनीकेँ बुझि पड़लैक जे संसारमे सब तरहक लोक अछि । एहि संसारमे प्राणी मात्र अपने ताले नचैत अछि । ओकरा समझ आव भीख सभसँ निकृष्ट वस्तु बुझि पड़ैत छैक तैयो आइ चारु कात उएह भीख...भीख...भीख...क शब्द व्याप्त अछि । रेमनी शांतचित अन्धकारक वातावरणमे बैसल अछि । रात्रिक प्रायः बारह बाजि गेल छलैक तैयो ओकरा आंखिमे निन्न नहि । हम भिखमंगनी रही, आइ हम रानी छी, की ई स्वप्न नहि सत्य थीक ? जीवनक दू पहिया...राजा...रंक...हम...की...ई जीवन...सत्य थीक...नहि नहि.....जीवन सत्य...नहि...आत्मा सत्य...भगवान !...भगवान !! ..भगवान !!!...रेमनीकेँ आंखिसँ अश्रुधारा बहैत छल आ बहुत दूरसँ शब्द आवि रहल छलैक :

अपने दारुण दुखसँ सदिखन चुपचाप कनैत रहइ छी
नहि विपति समयमे क्यो संगी अभिशाप जनैत रहइ छी

कुमारि

श्रीजगदीपनारायणचौधरी 'दीपक'

ई के छिड़िअल कोजागराक कौड़ी सन
टनटन के बाजे ढोल जकाँ अलगी सन
केराक वीर सन चिक्कन देह ककर छै
ई के भुकभुक करएछ लुत्ती चिनगी सन
छै ककर कानमे फूल कनैलर खोंसल
छै ठोर अदूलक कौड़ी सन विन पानक
काजर पारल डोका सन आँखि ककर छै
गरदनि परबा सन गुदगर पातर लकलक
पाकल गहूम सन रंग, दाँत ऐना सन
भदवारिक नभ सन आँठिया केश भूमटगर
मेहदोसँ कुन्डाबोर ककर आंगुर छै
रे ! ककरा मूँहक चानने करतै परतर ?
साओनमे टिप-टिप बुन्न जखन पड़इत अछि
के वैसल सखी-बहिनपा संग मड़बा पर
के कहै काक की दोस बान्हि के मुट्ठी
अंडी के भाग नुकायल अछि मुट्ठी तर
चुवै छै घरक चार पानि सउंसे घर
के हकमि-हकमि के फेके उपछि-उपछि केँ
ऊपर चिनवार असोरा के कंगनी तक
पच-पच कादो-कादो केँ नीपै अछि के
दीआवातीमे बुलिबुलि लेसै टेमी
भोरे बीछऽ मे दीप खियायल ऐंरी
दीपकेँ पलड़ा सँ अछि बनल तराजू
मटरक दाना सन माटिक सेर पसेरी
अबिते अगहन के गुहै धानक जुट्टी

चनबा लग बहुतो दिन धरि रहतै टांगल
 सिक्कीसँ बूनल रंग बिरंगक मौनी
 कौखन धोतकामे मोन ककरा बहटारल
 दसम बसन्त एकर फागुनमे बीतत
 तैं ई नहि जाइत अछि बूलऽ लै एकसरि
 ई अछि अपना बाबूकेँ परम दुलारू
 अत्रितै मोहार पर एकरा भलकै पोखरि
 परतर की करत मशीनक कहियो स्वीटर
 जे एखन कुरुशक मूँहे पर छानल अछि
 गामक ऐहव के जाइत देखि कुशेश्वर
 हमहू त जैब कुशेश्वर कहि कानल अछि
 सबहक साती ई डूब देलक गनि-गनिकेँ
 परूँके त जाय सिमरिया अर्द्धोधरिमे
 छूटल नहि नेनपन दै छै यौवन हुंलकी
 चुभकइयै जा कऽ ई अखनो पोखरिमे
 एकरा नहि कनियो बोध सिनेमा की छी ?
 जनइत अछि ई गौरी सावित्री सीता
 श्लोक, रमैनक. दोहा बहुत अबै छै
 भौजी रामैन पढ़ै छथि भैया गीता
 पाटीकेँ कचरासँ ई कचरि-कचरिकेँ
 सिखने अछि भौजीसँ दोनाइ बिटगरहा
 काका कहैत छथि—‘राजो हमर दुलारू
 सदी अछि भेल बनावह तुलसिक करहा’
 जीवन सरिता के कात लहरि बनि के जे
 अपना संग सबके हरदम एखन नचौने
 जइते मझधार निठुर क्यो रहतै एकरा
 तहियायल पेटिक साड़ी जकां नुकौने

सबसँ पैघ के ?

कविवरश्रीसीतारामभा

सम्प्रति संसारमे के सब पैघ कहबै छथि; तथा सबसँ पैघके ? एहि विचारार्थ एक सभामे सर्वसम्मतिपूँ निश्चित भेल जे निम्नलिखित पाँच व्यक्ति पैघ थिकाह :

(१) एक तँ पण्डित, पण्डितहुमे कवि, कविअहुमे छायावादी, ताहूमे जनिक स्वर सुरेख होनि । (२) दोसर जनिका जतेक पूँजी से ततेक पैघ । (३) तेसर जे सब चुमावमे भोट लेबाक हेतु ठाढ़ होइ छथि, ताहूमे जनिका भोट भेटि जाइ छनि । (४) चारिम जे एमे ले बनि जाइ छथि, ताहूमे जे राजधानीमे अपन भवन बनाय लै छथि । (५) पाँचम सबसौँ पैघ ओ थिका जे खादी-वस्त्र धारणकै गङ्गा जकाँ पापपुञ्जकेँ पचाय लै छथि ।

अन्तमे निश्चय भेल जे ई उपर्युक्त सब गुण एक्केठाम जनिकामे होइन से सबसँ पैघ थिका ।

ई सब गुण हमरा एकहि ठाम मोसमे देखि पड़ल तँ हम-हुनक एक स्तुति बनाओल अछि । यथा

मोसक स्तुति

छायावादी गान जकाँ तान सुनबै छी अहाँ
सोनित पचैमे पूँजीपतियौसँ चोख छी ।
छोटहुसँ छोट बनि भोट लेनिहार जकाँ
लोकक फिरैत घर - देहरि ओ मोख छी ।
हँटि जाइ बातसँ† पछाति ‡ एम. एले. जकाँ
मुख्य घर पटना ÷ बनाय निरधोख छी ।
मोस ! अहाँ निर्बलकेँ नित्य सतबै छी तैयो
खादी-मेषधारी जकाँ बनल अदोख छी ॥

† बात = वसात, तथा वचन (श्लेष) । श्लेषाकार ।

‡ पछाति—गछी तथा पश्चात् ।

÷ पटनामे बार हो मास मोसक मेला ।

सॉनेट

प्रो० श्रीकेदारनाथलाभ

अधरपर मधुर हास मधुमासकेँ लए,
सजल सिंधु केर सेज पर चाँन उतरल ।
लहरि कूलकेँ मूमिकेँ, चूमिकेँ हे !
जहर यौवनक पी सहज भाव विसरल ।

मधुप ऊबिकेँ, डूबिकेँ पी रहल मधु,
नलिनि केर मन्दिर नयन उन्मत्त तंद्रिल;
रहल ऊँधि तट केर भुजामे सुहागिन—
जकाँ बद्ध डोंगीक पाँतीक मंजिल ।

दरद स भरल रागिनीमे कुहुकिकेँ,
ने जानी केहन गीत गावैअ श्यामा ।
कि बौरल रसालक सिहरलैक तन-मन,
की चूलैक महुआ, विहँसलैक यामा ।

एहि मधु-क्षणमे, शून्य भवनमे, सुधि केर दीप सजा कय,
अहिँक गीत रचि गाबि रहल छी विरहक बीन बजा कय ।

प्रतीक्षा

● ●
मखनाक पत्नीक हाथसँ लालटेन खसि कै मिझा गेलैक । घरमे व्याप्त भै गेलैक—सघन अन्धकार । मोन भेल जे चिचियाक कहिएक ओइ बरसैत मेघसँ जे आइ तोहर बरसनाइ निष्प्रयोजन आ बेकार छीक । आइ काने दहीक एहि अभागलिकेँ जकरा हेतु आव सदिखन भादवक अन्हरिये रहतैक, शरदक पूर्णिमा कहिओ हेवे नहि करितैक । ● ●

विद्यालयसँ अवकाश भेटितहि बूचड़खानासँ छूटल जानवर जकाँ नाझरि दवाकै डेरा दिश पड़ैलहुँ । दिन-भरि प्रचण्ड गर्मी छलैक । उपरसँ ओहि गर्मीमे केमिस्ट्री घोखनाइ आर अलजेबराक इनडिसेष आ शर्ड्समे माथ गरमौनाइ । मोन क्लान्त भै गेल छल ! डेरो पर विश्राम नहि ! प्रचण्ड गर्मी, आकुल प्राण ।

अहुरिया कटैत कहुना साँझ भेल ! डेरासँ विदा भेलहुँ । टहलैत शहरसँ दूर बहुत दूर चल ऐलहुँ ! सम्पूर्ण वातावरण शान्त छल कोनो विप्लव वा विहाङ्गिक सूचना दैत !

उष्णताक उपरान्त शीतलता स्वाभाविक । धरतीकेँ वेदना संतप्त देखि अम्बर पर पयोधरक आक्रोश चिकरि उठल । नयन अग्नि—स्फुलिंग सभ चमकै लगलन्हि आ होमय लगलन्हि अविरल—अश्रुपात ।

उपर तकलहुँ—उमड़ैत मेघ—उमड़िते आवि रहल छल । धरणी पियासलि छलीह । पयोधर अपन नयन-जलसँ हुनक पियास मिभावक हेतु उद्यत छलाह । बरखा आरम्भ छल—अटूट धार ! आव भेल जे भीजि रहल छी । सर्वत्र व्याप्त छल अंधकार-निविड़ अंधकार ! हाथकेँ हाथ नहि सुभैत छलैक । मनबोधक शब्दमे

सुइ लै बेधिय गाँथिय ताग, हाथ छुबिय तँ हाथहि लाग ।
बिजुरीक क्षणिक आलोकमे बदलहुँ मुदा भुतिआ गेलहुँ ।

कपड़ा भीजिक देहसँ सटि गेल ।

सामने एक टा घर देखि भट दै पहुचलहुँ । जिर्जीर खटखटौलहुँ । केवाड़ फूजल । आर हम हतप्रभ भै देखल लालटेन लेने ठाढ़ि एक सौम्य रमणी मूर्ति ! ओ मूर्ति !

गोता सन पवित्र, गंगा सन निष्पाप एवं निष्कलंक, शिशुक हँसी सन निर्मल । पीअर मुखाकृति, पातर...लौंगिया मरचाइ सन लाल ठोर आमक पात सन पैघ-पैघ आँखि । देखि क' श्रद्धा उत्पन्न भेल । भीतर प्रविष्ट भेलहुँ । लालटेनक मद्धिम इजोतमे हम देखल एकटा बूढ़ी । जीवनक शतशत आवातसँ क्लान्त-श्रान्त । भावहोन आँखि ।

युवतीकेँ देखल । एक ठाम अठारह वासन्तीग्रन्थि, सभमे सोना सन रंग लेने नवयौवना, दोसर समयक साठि पतझड़मे झमाेल वृद्धा । तेसर क्यो दृष्टि-गोचर नहि भेल । जिज्ञासा उपजल । थिकी ई दूनू नारी ?

भीजल कपड़ाकेँ गारि वृद्धा लग आबि एक पीढ़ी पर बैसलहुँ । गप्पक क्रम चलाओल । वृद्धासँ ज्ञात भेल जे ई नवयौवना, हिनक पुतोहु थिकीह । हिनक पुत्र माखन डेढ़ बरख भेलन्हि नोकरोक हेतु कलकत्ता गेल छलन्हि । आइधरि नहि ऐलन्हि अछि ! चिट्ठी बराबर अबैत रहैत छन्हि जे छुट्टी भेटिते आयब आ पाँच तारिखकऽ ३०)क मनिआर्डर ।

कहैत-कहैत वृद्धाक कण्ठ अवरुद्ध भै गेलन्हि एवं नेत्र सजल । पाछाँ घूमि कै देखल—चौखटिपर ठाढ़ि छल मखनाक नवयौवना पत्नी । आँखिमे ज्वलित दाह ।

खिड़की बाटे मोन कातर भऽ गेल । बाहर मेघ गरजए । बिजुरि चमकि उठए । हम सोचै लगलहुँ जे वर्षा भै रहल अछि । धरती तृप्त भै रहल छथि । मुदा ई नारी, मखनाक ई नवयौवना पत्नी । युगसँ पियासलि की ई बरखा एकर अवरुद्ध कण्ठकेँ सरस कै सकलैक ? ओकर हृदयमे प्रज्वलित विगहाग्निकेँ ई जल मिभा सकतैक ? किन्नहुँ ने ।

एतवेमे जिर्जीर फेर खट-खटा उठल ! केवाड़ी फोलि हम देखल—ठाढ़ छल एकटा डाकपीन । बाजल—तार अछि । हम जल्दीसँ तार लेलहुँ । भीतर आबि लालटेनक मद्धिम इजोतमे हम तार पढ़ल—मोटर दुर्घटनामे मखना

मरि गेल ! स्तम्भित भै गेलहुँ ? बाहर बिजुरी जोरसँ कड़कल ! मखनाक पत्नीक हाथसँ लालटेन खसि कै मिभा गेलैक । घरमे व्याप्त भै गेलैक—सघन अंधकार । मोन भेल जे चिचियाक कहिएक ओइ बरसैत मेघसँ जे आइ तोहर बरसनाइ निष्प्रयोजन आ बेकार छौक । आइ कानै दहीक एहि अभागलिकेँ जकरा हेतु आब सदिखन भादवक अन्हरिये रहतैक, शरदक पूर्णिमा कहिओ हेबे नहि करतैक ।

अंधकार निस्तब्धता भंग करैत मखनाक पत्नी बाजलि—की लिखल छैक ? हठात नहि किछु फुरल । की कहिअउ ? बोल नइ फूटल ।

की छइ ? बजइ ने किए छी ? अन्धकारमे ओ आगाँ बढ़ि हमर गट्टा पकड़ि चिकरि कऽ बाजलि ।

नइ किछु, नीके अछि । दशमी छुट्टीमे अओत । मुँ हसँ खसल ।

अंधकारमे हम सुनल ओकर हृदयक दीर्घ :निश्वास । आब जाइत छी—ई कहि उत्तरक अपेक्षा कयने बिना हम ओहि अन्हरिया रातिमे भीजैत विदा भेलहुँ । बाटमे हमरा मोन धिक्कारलक—ई की ? तौ ई की कहि देलहिक ? मखना मरि गेल छैक । आब ओ कहिओ नहि ओतैक ।

हम अस्पष्ट स्वरमे अपन मोनकेँ कहल—हम की कै सकैत छलियेक । हमरामे एतेक साहस नहि छल जे ओकरा एहन हृदय-विदारक सम्वाद कहि दितियेक । ओ जीवन भरि प्रतीक्षा करतैक ई बूझि जे हमर 'ओ'—हमर प्राणधन जीवैत छथि कियेक प्रतीक्षा—अजस्र अनाद्यान्त, कालक नदीमे दीप थीक ।

—धैर्यसँ, शान्तिः की नहि भ सकैछ ?

—मृत्यु कोनो प्रवारसँ टारल नहि जा सकैछ ।

ओ तँ हमर संगी थीक, हमर मित्र थीक । यदि मरैवाला बहादुरीसँ मरथि तखन हुनका सन क्यो नहि ।

ओ दिन आ ओइ दिन

डा० श्रीव्रजकिशोरवर्मा

जाड़क प्रातः । गाछ सब जेना गरदिन धरि कुँस उजरा अलमान ओढ़ने ठाढ़ छल । सोझहाँक पोखरि सै भाफ उठैत छलैक । मने भोरे-भोर प्रकृति-सुन्दरी चाह बनबैक हेतु जल औँटैत होथि ।

अमलिन अपन ओभर कोटक बटन लगबैत अपना पत्नी सै कहलथिन्ह—
प्रणयाभिलाषी पराशर ओइ नवयौवना गोंढ़ि कन्यासँ प्रणय-निवेदनक क्रममे इ कुहेश बनाओल ।

हुनकर पत्नी भभा कै हँसि पड़लीह—सैह ओ महाप्राण महर्षि ओइ कुमारि ललनाक एकोट्टा बहाना नइ चलै देलथिन्ह । देखक मछैन गन्धकै मधुगन्ध बनाओल, अढ़ करइ लेल कुहेशक सिरिजमान कैल आ सरपतक वन निरमाओल आ...।

अमलिन, घरवालीक हाथमे शाल दैत विहुँसलाह—धोया-पुता भने सूतल अछि । महर्षिक कुहेशक हमरो लोकनि थोड़-बहुत आनन्द ली । चलू ने एक बेर घूमि आवी, सुनसान पथ हेतैक । जौँ एक आध व्यक्ति अबैत देख पड़त तैओ मेघ लोकक प्राणी सन धूआंमे लपेटल बुझायत । पात भरल शीशोक गाछ सबहिक गत्तर-गत्तरसँ नव आंकुर बहरा कै पुछैत हेतैक—वसन्त एखनि तक कियै ने एलाह ?

गृहिणी शाल लपेट लेलन्हि आ पतिक संग-संग चलि पड़लीह । प्रातःकालोन आभामे हुनक मखनिया चिक्कन मुँह आरक्त भेल जाइत छलैन्ह ।

ओ अमलिनक हाथ पकड़िकै कहलथिन्ह—एहेन बेरमे हमरा अपन दादी मोन पड़ि जाइत छथि । सैह, ओ दिन केहेन छलैक । ओ हमरा सबकै स्कूल जाइत देखै तँ कहै—इ सब केहेन भेलि । कहू तेँ पुरुष जेकां स्कूल जाइत अछि । पैघ हैत तँ अपना-अपना घरबलाक संग उदाम भेल टहलत । हे भगवान, से दिन केहेन बेखर हेतैक ।

अमलिन मुसुकि रहला । कनिये दूर पर एकटा कचनार खूब भकरार भ कै फुलायल छलैक । पात तँ सभटा झड़ि गेल छलैक मुदा फूल सोहरल छलैक ।

ओइठां पहुँचि कै ओ पत्नीक हाथ पकड़ि कै आने शपूर्वक बजलाह—आ ओहि दिन कोनो पति अपना पत्नीक हाथ एहिना चापैत आ पुछलथिन्ह—अहा अपना पहिल पतिकेँ किया छोड़ल ?

पत्नी उत्तर देलथिन्ह—हुनका हैपी भैली चाय पसिन्न छलन्हि आ हमरा ब्रुकबौन्ड । तही लै देना मेनी भ गेल करय । तैं ।

आ दोसर पति अहां कै कियै छोड़लन्हि ? फेर प्रश्न भेल । उत्तर भेटलैन्ह—ओ एक दिन एकटा सिने मौगीक मुँह देखि मुग्व भ गेलाह । फिल्मक ओइ चित्र सनक हिरोआइनक मुँह सन मुँहवाली कै ताकि कै उपर केलन्हि आ हमरा छोड़ि देल ।

अमलिनक पत्नीक मुख पर घृणाक छाया स्पष्ट भ उठलैन्ह ।

धौर जो, केहेन बेखर हैत ओ युग । ओ कहलथिन—घुरि चलू । धीया-पुता उठि गेल हैत ।

ओ तेजी सै मुड़ि गेलीह, मने ओइ कचनारक गाछ तरसँ भविष्यक भावना हुनका नहू-नहू केहारने अवैत हो आ ओकरासँ जान छोड़बइ लेल ओ फट-कलि जाइत होथि ।

अमलिन हँसैत-हँसैत संगे-संगे चलैत रहलाह ।

—सुखक पछाति दुःख, दुःखक पछाति सुख । रौद अछि त छाया सेहो, प्रकाश अछि त अन्धकार सेहो । जन्म अछि त मृत्यु सेहो । एहि द्वन्द्वसँ हँटब अनासक्ति थिक ।

—शान्ति बाहरक कोनो वस्तु सँ नहि प्राप्त होइछ । ओ तँ अपन भीतरक विषय थिक ।

वैदेही-समितिक इतिहास ओ डाक्टर चटर्जीक भाषणा

प्रोफेसर श्रीभक्तिनाथसिंहठाकुर

वैदेही समितिक साहित्य-विभागक एक विशिष्ट आयोजनक अवसर पर डा० श्रीसुनीतिकुमार-

चटर्जीक मैथिलीक यथोचित वैधानिक अधिकारक सुदृढ़ विचार

‘मैथिलीकेँ यथोचित अधिकार स्थान एवं महत्त्व देल जाय’—‘मैथिलीक उन्नतिकेँ हेतु अंग्रेजी ओ संस्कृतक संगे-संग अध्ययन आवश्यक’—गत ८ जनवरीकेँ दरभङ्गास्थ वैदेही - समितिक साहित्य - विभाग द्वारा आयोजित साहित्यिक सभामे सुप्रसिद्ध भाषावेत्ता डाक्टर श्रीसुनीतिकुमारचटर्जीक उपर्युक्त सुदृढ़ विचार छलन्हि ।

उक्त सभा स्थानीय लक्ष्मीश्वर सार्वजनिक पुस्तकालय मध्य आयोजित भेल छल । सभास्थ उपस्थित विद्वद्बृन्द एवं आगत सज्जनवृन्दकेँ सम्बोधित करैत पश्चिमी बङ्गाल-विधान-परिषद् तथा भारत सरकारक संस्कृत - आयोगक अध्यक्ष सुप्रसिद्ध भाषाशास्त्री डाक्टर श्रीसुनीतिकुमारचटर्जी अपन विचार प्रकट कएल जे मैथिली भाषाकेँ सम्मृद्ध करबाक हेतु संस्कृत एवं अंग्रेजी भाषा साहित्यक अध्ययनक संगे-सङ्ग प्रोत्साहन देब परमावश्यक अछि तैखन मैथिलीक प्रति असीम अनुरागक रचनात्मक स्वरूप उपस्थित भए सकैछ । दरभङ्गा महाराजक मुख्य परामर्शदाता प० श्रीगिरीन्द्रमोहनमिश्रजी उक्त सभाक सभापति छलाह । विद्वान वक्ता डाक्टर श्रीचटर्जीक भाषणक विषय छल ‘मैथिलीक समस्या’ ।

आयोजित साहित्यिक गोष्ठीक उपस्थित प्रमुख विद्वद्बृन्द

संस्कृत - आयोगक सदस्यगण एवं स्थानीय शिक्षा - सस्था सभक शिक्षकगणक अतिरिक्त कतिपय विशिष्ट व्याक्त सभामे उपस्थित छलाह । निम्नलिखित महानुभाव लोकनिक नाम विशेष उल्लेखनीय अछि :

मद्रास विश्वविद्यालयक प्राध्यापक डा० श्रीराघवन, बनारस विश्वविद्यालयक प्राध्यापक श्री टी० आर० चौ० मूर्ति, डा० श्रीवीरमणिउपाध्याय, सहायक निदेशक, (संस्कृत) शिक्षा - विभाग, बिहार, श्रीकुमारकल्याणलाल, एम०

एल० सी०, डाक्टर बी० आर० शर्मा, प्रो० श्रीअनन्तलालठाकुर, कवि शेखर प० श्री बदरीनाथ झा, प० श्री ए० सी० झा, प्राचार्य सरकारी संस्कृत महाविद्यालय, छपरा; प्रो० श्रीतन्त्रनाथझा, राजपण्डितश्रीवलदेवमिश्र, डा० श्रीलक्ष्मणझा; प्रो० श्रीउपेन्द्रझा; प्रो० श्रीसुरेन्द्रनाथझा; प्रो० श्रीसुरेन्द्रझा 'सुमन', प० श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' आदि ।

वैदेही - समितिक संक्षिप्त इतिहास ओ कार्यक्रम

वैदेही - समितिक इतिहास एवं विकासपर प्रकाश दैत प्राध्यापकश्रीभक्तिनाथ बाबू कहल जे १९४६ ई०मे सीतामढ़ी (मुजफ्फरपुर) मे एहि समितिक जन्म भेल । किन्तु एकर शैशवावस्थहिमे किछु शिथिलता आवि गेल । तदुपरान्त १९५३ ई० मे मिथिला-अनुसंधान-संस्थाक भूतपूर्व निर्देशक म० म० डाक्टरश्रीउमेशमिश्रजीक अध्यक्षतामे एगारह व्यक्तिक कार्यकारिणी समिति द्वारा दरभङ्गमे पुनः वैदेही-समिति सुसंगठित भेल । बिहार राज्यक राज्यपाल श्रीरङ्गनाथरामचन्द्रदिवाकर, कलकत्ताक डा० बी० सी० लॉ आदि सदृश देशक प्रसिद्ध विद्वान, शिक्षा - विशारद तथा परोपकारी साहचर्य एवं सहयोगसँ ई समिति अपनाकेँ पूर्ण गौरवान्वित एवं धन्य बुझैछ । ई समिति छत्रो भागमे विभाजित अछि । एकर पत्र - विभाग द्वारा 'वैदेही' नामक मैथिलीक प्रमुख (पाक्षिक एवं आव मासिक पत्र) १९५० ई० सँ प्रकाशित भए रहल अछि आ ई समस्त भारतवर्षक रेलवे ह्वीलर - स्टौलपर प्राप्य अछि । साहित्य-विभाग द्वारा मैथिलीक विशिष्ट विद्वान ओ प्रेमीसँ मैथिली साहित्यक गवेषणात्मक निबन्ध प्रति मास साहित्यक गोष्ठीमे पढ़ाओल जाइछ । समितिक कला एवं संस्कृति विभाग डा० फ्रैंकलिन एडगर्टन (सभापति, अमेरिकन ओरिएण्टल सोसाइटी) क सम्मानमे 'अयाची मिश्र' क अभिनय प्रस्तुत कएने छल । वेनिस (इटली) मे 'अन्तर्राष्ट्रिय-हस्तकला प्रदर्शनी'मे समिति दिसिसँ अहिपन ओ देवालक चित्रावली सभ पठाैल गेल छल । प्रकाशन - विभाग बहुतो मैथिली विद्वान लोकनिक उच्च कोटिक कृति प्रकाशित कएलक अछि । एहि विभागक सभसँ पैघ सफलता ई थिक जे प्रथम अखिल भारतीय मैथिलीसाहित्य सम्मेलनक अवसर पर १७ गोट प्रकाशन ई विभाग कऽ सकल अछि । ई अत्यन्त सन्तोषक विषय थिक जे समितिक

विक्रय - विभाग द्वारा मैथिलीक समस्त नवीन ओ प्राचीन ग्रन्थ भारतक प्रत्येक भागमे प्राप्य अछि । एहि समितिक छठम विभाग प्रचार-विभाग द्वारा भारतक विभिन्न शिक्षा-संस्था सभमे (अखिल भारतीय आ' प्रान्तीय) मैथिलीकेँ पाठ्यक्रममे रखेबाक प्रयत्न कएल गेल अछि । उदाहरण - स्वरूप अखिल भारतीय हिन्दी - साहित्य सम्मेलन, उत्तर प्रदेश आ' राजस्थान शिक्षा समितिक नामोल्लेख एहि प्रसंगमे विशेष रूपेँ कएल जाए सकैछ । ई विभाग भारत - सरकारसँ ईहो प्रार्थना कएतक अछि जे दरभंगा मध्य अखिल-भारतीय आकाशवाणी-केन्द्रक स्थापना कएल जाय ।

वैदेहिक कार्यकारिणी - समितिक अथक परिश्रमसँ भारतीय संसदक सस्य आ बिहार - विश्वविद्यालयक उपकुलपति श्रीश्यामनन्दनमहाय, पद्म रूपण, क समापतित्वमे अखिल भारतीयमैथिली-साहित्य सम्मेलन सफलतापूर्वक समाप्त भेल । ई सम्मेलन बहुतो विशेषता रखैछ । ई सम्मेलन आठ भागमे विभाजित छल जाहि सभमे मैथिली ओ अन्य भाषाक विरिष्ट विद्वान लोकनि । वक्तृता देलैन्ह तथा तर्क-वितर्क कएतन्हि । ई बात विशेष उल्लेखनीय अछि जे एहि सम्मेलनक सफलताक हेतु डा० आर० के० दीक्षित (लखनउ विश्वविद्यालय) प्रो० भट्टाचार्य (कलकत्ता विश्वविद्यालय) ओ प्रो० चिन्ताहरण चक्रवर्ती सदृश विद्वान लोकनिक अपन-अपन बहुमूल्य निबन्ध प्रस्तुत कएलन्हि । उक्त अधिवेशन सम्मेलनक मुख्य संरक्षक महाराजाधिराज डा० सर कामेश्वर-सिंह बहादुर द्वारा उद्घाटित भेल । ई परम गौरवक विषय थिक । संगहि श्रीमानमहाराजाधिराज, अपन उदारता एवं मातृभाषाक प्रेम परिचय एहि रूपेँ देलन्हि जे सम्मेलनक आयोजन - कार्यसँ प्रसन्न भए सबसँ अधिक दान २०००) टाका देलैन्हि जाहिसँ 'सम्मेलनक' सफलताक हेतु सर्वाधिक श्रेय दिनके देल जाइछ । प्रतिनिधि लोकनिकेँ 'रेलवे कनसेशन' दए, चलचित्र विभाग नियुक्त कए तथा १५००) टाकाक साहाय्य दए भारत एवं राज्य सरकार एकर सफलतामे क्रियात्मक सहयोग देने छल ।

एहि सम्मेलनक दोसर प्रमुख उल्लेखनीय विषय ई छल जे भारतवर्षक विभिन्न प्रान्तीय भाषा सभमे एकर सामूहिक भाषण आयोजित कएल गेल । एहि अवसरपर प्रो० पी० गोस्वामीक आसामोमे, श्री एन० के० दासक उड़ियामे, श्री ए० एस० नटराज ऐयरक तामिलमे, प्रो० विश्वनाथक तेलगूमे, श्री एन० वी०

कृष्णा वारियरक मलयालममे, डा०एस० एम० कादरी जोरे उर्दू मे, श्री लक्ष्मीपातसिंहक मैथिलीमे, डा०श्रीजयकान्तमिश्रक अंग्रेजीमे, श्रीमती लीलारायक बंगालीमे, श्रीकृष्णभाक नेपालीमे आ प्रो० प्रीतमसिंहक पञ्जाबीमे निबन्ध सभ पढ़ल गेल आ' विचार-विनिमय कएल गेल ।

म० म० डा० गङ्गानाथभाक तैलचित्रक उद्घाटन

विगत सात वर्षक संचित प्रतिवेदनक समाप्त करैत श्रीभक्तिनाथसिंहठाकुर ईहो कहल जे मैथिलीक सुविख्यात विद्वान लोकनिक नाम ओ कीर्तिकेँ विर-स्मरणीय एवं अलुएण राखबाक दृष्टिँ रचनात्मक कार्य स्वरूप समितिक एक योजना ईहो छैक जे सार्वजनिक शिक्षा-संस्था सभमे समय-समयपर हुनका लोकनिक तैलचित्र राखल जाय । एहि योजनामे ई समिति अपसर भए चुकल अछि । यथा—प्रयाग विश्वविद्यालयक भूतपूर्व उपकुलपति म० म० डा० गङ्गानाथभाक पुण्य-स्मृतिमे ई समिति जनताक सहयोगसँ स्थानीय लक्ष्मीश्वर सार्वजनिक पुस्तकालय मध्य हुनक एक तैलचित्र सम्मेलनक अवसरपर उद्घाटित करओलक अछि ।

अध्यक्षपदीय भाषण

प० श्रीगिरीन्द्रमोहनमिश्रजी अपन अध्यक्षपदीय भाषणमे डा० चटर्जीक परिचय दैत कहल जे हिनक सदृश भारतक महान विद्वान एवं आदर्शवादोक स्मरणीय देनसँ गोष्ठी मे उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति परिचित छी । ई भाषा-समस्या क प्रख्यात आचार्य छथि । ई जतय कतहु जाइत छथि ओतए वैज्ञानिक अनुसन्धान मे संलग्न व्यक्ति हिनक उक्ति केँ ध्यानपूर्वक सुनैत छथि जाहिसँ ओ लोकनि नवीनतम विचार-धारासँ परिचित भए जाथि । डा० चटर्जी ज्ञानक अनुसन्धानमे सतत नव-नव विचारधारा क उद्भावना करैत छथि ।

विशेष-स्वागत

लक्ष्मीश्वर सार्वजनिक पुस्तकालयक माननीय सचिव श्रीकुमारकल्याणजाल मुख्य अतिथि ओ सभाक अध्यक्षकेँ माला पहिराओल ।

डाक्टर चटर्जीक भाषण

डाक्टरश्रीसुनीतिकुमारचटर्जी मिथिलाक विद्वान्क बीच अंग्रेजीमे भाषण करैत क्षमा-याचना कएल आ' कहल जे अंग्रेजीक बनल - बनाओल एक साँच

छैक आ संगहि हमरा लोकनिकाँ अँग्रेजी भाषा ओ साहित्यसँ बहुत किछु सिखवाक अछि । उपस्थित मण्डलीक बंगलाक प्रति स्नेहक प्रशंसा करैत डा० चटर्जी कहल जे अन्य भाषाक सदरा बंगलो भाषाक दुइ रूप अछि—(१) विद्वानक भाषा आ' (२) जनसाधारणक भाषा ओ ईहो कहल जे जाहि भाषा मे अहाँ लोकनि बजैत छी ओ लिखैत छी ताहि भाषाक प्रति यथार्थ स्नेह अवश्ये राखी आ ई प्रवृत्तियो उचितो थिक ।

मैथिली भाषाक समस्यापर विचार करैत डाक्टर चटर्जी एकर तुलना राजस्थानी भाषाक समस्याक संग कएल आ तदनुक्रमे कहल जे एक समय राजस्थानी लोकनि दिल्लीक प्रभावमे आबि उर्दूकेँ अपन भावार्थव्यक्तिक माध्यम तथ व्यवहारिक भाषा मानि अपन राजस्थानी भाषाक एकदम परित्याग कए देने छलाह । १९४६ ई० मे शिवचन्द्र भारतीय 'तिलोत्तमा' क प्रकाशन कए राजस्थानी-भाषी लोकनिमे जागरण एवं अपन आदर्शक उच्चाभिलाषा उत्पन्न कएलन्हि आब ईहो देखैत छी जे ओएह राजस्थानी भाषा एखन समस्त भारतवर्षक लाखो राजस्थानी-भाषी मध्य सभक एक जीवित भाषा भए गेल अछि । मैथिलीक हेतु सम्प्रति ओहने परिस्थिति अछि आ आब ओ समय उपस्थित भए गेल अछि जखन कि मैथिलीकेँ स्वतन्त्र सत्ता भेट जएबाक चाही मुदा एहि हेतु मैथिली भाषा-भाषी लोकनिकेँ धैर्य राखक चाहिएन्हि । पृथ्वी पर आब एहन कोनो शक्ति नहि छैक जे कोनो भाषाक अस्तित्वकेँ नाश कए दिअए । विश्वकवि रवीन्द्रक उक्तिकेँ उद्धृत करैत डा० चटर्जी कहल जे भारतवर्ष एक कमलक फूल थिक जकर प्रत्येक दल अपन संस्कृति एवं एकीकरण शक्तिक प्रतिनिधित्व करैछ । एहन सुन्दर कमलक एकोटा दल तोड़लासँ नीक नहि भए सकैछ ।

मैथिलीक क्रमिक तथा द्रुत विकासक हेतु एक स्थायी समाधान उपस्थित करबा लेल मैथिलीक विद्वान एवं प्रशंसक लोकनिकाँ भाषा-शास्त्रक एक यथार्थ विद्यार्थीक रूपमे डाक्टर चटर्जी निम्नलिखित पाँच विषयपर ध्यान देबाक आदेश देल :

(१) ई देखक चाही जे अतिक्रमणकारी हिन्दी-भाषासँ मैथिली भाषाक व्याकरण भिन्न अछि कि नहि ? डा० चटर्जी कहल जे यदि दूनू भाषाक व्याकरणक अध्ययन कएल जाए त ई स्पष्ट अछि जे मैथिली आ हिन्दी दूनू पूर्ण भिन्न अछि । एहि विषय पर कोनो विवाद नहि होएबाक चाही—ई निर्विवाद अछि । यदि हिन्दीक पक्षपाती मैथिलीकेँ हिन्दीक उपभाषा कहैत छथि त ओ निश्चितरूपेँ भ्रममे छथि । वैज्ञानिक एवं भाषा-सिद्धान्तक आधार-पर हिन्दी ओ मैथिलीक व्याकरण एक दोसरसँ सर्वथा भिन्न अछि ।

(२) द्वितीय प्रश्न अछि ई जे मैथिलीक प्राचीन साहित्य अछि कि नहि ? एहि प्रसंग श्रीचटर्जी कहल जे मैथिली साहित्यके प्राचीनतामे कोना सन्देहे नहि अछि । एकर प्रभाव बंगला, उड़िया ओ आसामी पर व्यापक रूपेँ पड़ल अछि । विद्वान वक्ता एहि बातकेँ स्वीकार कएल जे बंगलाक ब्रजबूली-साहित्य बंगाली लोकनिक अपनाओल विशुद्ध मैथिली भाषामे अछि । 'भानुसिंहेर पदावली' वस्तुतः बंगलाक एक बड़ पैघ कविक मैथिलीक काव्य-रचना थिक ।

(३) आधुनिक मैथिली-साहित्यपर ध्यान दैत डा० चटर्जी ई वृत्ति प्रसन्नता व्यक्त कएल जे वर्तमान कालमे बहुतो मैथिली विद्वान द्वारा कतिपय महाकाव्य सभक रचना भेल अछि । किछु मास पूर्व आयोजित अखिल भारतीय मैथिली लेखक-सम्मेलनक कार्यसँ बड़ प्रसन्न भए विद्वान लोकनिकेँ भविष्यमे मौलिक रचना द्वारा मैथिली-साहित्यकेँ समृद्ध बनेबाक विचार देल ।

(४) मैथिलीक समस्याक अग्रिम विषय पर विचार करैत डा० चटर्जी अपन विचार व्यक्त कएल जे बंगाली, पंजाबी तथा मारवाड़ी सदृश अहूँ स्थानक लोक केँ अन भाषाक गौरव होएबाक चाही, पारस्परिक वार्तालापमे अपने भाषाक प्रयोग करक चाहा । मैथिली भाषा-भाषीकेँ अपन भाषामे गप्प करैत देखि बड़ प्रसन्न भेलाह तथा कहल जे ई बड़ सन्तोषक विषय थिक ।

(५) मैथिलीक विद्वान लोकनिकेँ डाक्टर चटर्जी कहल जे समय-समय पर ओ लोकनि मैथिलीक समस्या पर विचार-विनिमय करैत जाथु जाहिसँ मैथिलीक काठिन्य दूर होएत आ ओकर बहुत हित होएत ।

पूर्वदिसँ कलकत्ता विश्वविद्यालय मे मैथिलीक सम्मानित स्थान

भारतीय एकता पर ध्यान दैत डा० चटर्जी राहुल सांकृत्यायन ओ बनारसीदास चतुर्वेदीक 'भाषा-समस्याक विकेन्द्रीयकरण-सिद्धान्त' क विरोध कएल । भाषाक यथार्थ प्रेम राजनैतिक रंग देबामे नहि अपितु ओकर वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित अध्ययनमे सन्निहित छैक । इएह कारण छल जे कलकत्ताक विश्वविद्यालयक उपकुलपति सर आशुतोष मुखर्जी भारतक अनेक भाषाक जे पाठ्यक्रम निर्धारित कएने छलाह ताहिमे अन्य आधुनिक भारतीय भाषा सभक संग मैथिलीक बड़ सम्मानित स्थान देल गेल छल । कलकत्ता विश्वविद्यालयक प्रवेशिका परीक्षासँ लए एम० ए० धरिक पाठ्यक्रममे मैथिली एक प्रमुख विषयक रूपमे राखल गेल छल । उक्त विश्वविद्यालयक मैथिली-विभागकेँ सुशोभित करबाक हेतु कुमारश्रीगङ्गानन्दसिंह, श्रीगङ्गापतिसिंह आ पं० खुदीभा आमन्त्रित भेल छलाह ।

मैथिली एक स्वतन्त्र भाषा थिक आ एकर अपन पृथक् साहित्य छैक—मैथिलीक यथोचित वैधानिक स्थान ओ अधिकार भेटबाक चाही

विद्यापतिक परिचयक सत्यताक उद्घाटन करैत डा० चटर्जी कहल जे १८८० ई० धरि विद्यापति बंगाली कवि मानल जाइत छलह । कि० तु १८८१ मे बंगलाक विद्वान शारदाचरणमित्र अपन मूल्यवान एवं ठोस गवेषणासँ ई सिद्ध कएल जे विद्यापति बंगाली नहि, मैथिल कवि छलह । तत्पश्चात् बंगला भाषी विद्यापतिकेँ मिथिलाक कोकिलक रूपमे आदर करए लागल । एमहर आविकेँ प्रयाग विश्वविद्यालयक म० म० डा० श्रीउमेशमिश्रक सुपुत्र डा० श्रीजयकान्त मिश्रजी मैथिली-साहित्यमे गवेषणा कए 'मैथिली-साहित्यक इतिहास ओ विकास' नामक जे अपन दुइ गोट ग्रन्थक रचना कएलन्हि अछि से डा० चटर्जी क दृष्टिँ, भाषावेत्ताक जगतमे एक यथार्थ प्रामाणिक कृति थिक । एहि ग्रन्थसँ विद्वन्मण्डली केँ ई विश्वास भए गेलैक अछि जे मैथिली एक स्वतन्त्र भाषा अछि आ अबिलम्ब एकरा यथोचित स्थान भेट जएबाक चाही । इएह कारण थिक जे डा० चटर्जी स्वयं एहि वस्तुक अनुभव कएल जे मैथिली, राजस्थानी आ सिन्धी केँ भारतीय संविधानमे अति शीघ्र समुचित अधिकार ओ स्थान दए देबाक चाही । ई कोनो अत्युक्ति नहि जे मगही भाषा-भाषी छाड़ि केवल मैथिली-भाषीक संख्या आइ एक करीब तीस लाखसँ उपर अछि । ई प्रशंसाक विषय थिक जे चन्द्रधारी मिथिला संग्रहालयक स्थापना द्वारा (जे राज्य सरकार हालेमे अपना हाथमे लए लेलक अछि) एहि क्षेत्रक प्राचीन परम्परा एवं संस्कृतिक सुरक्षाक हेतु प्रयत्न कएल जाए रहल अछि । डाक्टर चटर्जी अन्तमे बहुत जोर दए ई उद्घोषित कएल जे मैथिली-भाषा-साहित्यक क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित विकासक हेतु भारतक एहि भागमे संस्कृत ओ अंग्रेजीक अधिक अध्ययन होएबाक चाही ।

धन्यवाद-प्रदान

सभाक अन्त मे समिति एवं उपस्थित श्रोताक दिशिसँ धन्यवाद-प्रस्ताव उपस्थित करैत डा० श्रीलक्ष्मणभा कदल जे मिथिलाकेँ आइ बंगालसँ ओहने सहयोग आ सहानुभूतिक आशा जेहन आइसँ पाँच सए वर्ष पूर्व बंगालक मिथिलासँ रहैक ।

मैथिली विश्वकोष-निर्माण-योजना—डा० चटर्जी एवं अन्य विद्वान द्वारा प्रशंसित

सभाक विसर्जनोपरान्त 'वैदेही-समिति' क मुख्य सचिव श्रीकृष्णकान्तमिश्र डा० चटर्जी एवं आयोजक अन्य सदस्य लोकनिक समक्ष मैथिली-विश्वकोष निर्माणक योजना प्रस्तुत कएल जकर विद्वन्मण्डली पूर्ण प्रशंसा कएलक ।